अंधविश्वास, अज्ञान, गलत मान्यताएं, पूर्वाग्रह हमारा दुश्मन है उसे ठुकराओ: आचार्य प्रशांत

Apr 06, 2026 07:05 pm IST

Newswrap **हिन्दुस्तान**, देहरादून

Preferred

-दार्शनिक प्रशांत ने एमआईएस के छात्राओं के साथ संवाद किया व उनके सवालों के संतोष

Story continues below advertisement

मसूरी, वरिष्ठ संवाददाता। दार्शनिक व लेखक आचार्य प्रशांत का मसूरी इंटर नेशनल स्कूल में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि जीवन में परिणाम नहीं, बल्कि ईमानदारी जरूरी है।अंधविश्वास, अज्ञान, गलत मान्यताएं, पूर्वाग्रह है जो हमारा दुश्मन है उसे भी ठुकराओ तभी आगे बढ़ सकेंगे। सोमवार को मसूरी पहुंचने पर आचार्य प्रशांत का प्रधानाचार्या शालू बब्बर ने बुके व शॉल भेंट कर सम्मानित किया। मसूरी इंटरनेशनल स्कूल की छात्राओं से विद्यालय के सभागार में आचार्य प्रशांत ने सीधा संवाद किया। यह सत्र न केवल अकादमिक प्रश्नों तक सीमित रहा, बल्कि पहचान, आत्म-बोध, सफलता के दबाव और शिक्षा के वास्तविक अर्थ जैसे महत्वपूर्ण विषयों को भी केंद्र में लेकर चला।

Story continues below advertisement

छात्राओं ने प्रश्न पूछे और पूरे सत्र में सक्रिय भागीदारी दिखाई। पहचान और आत्म-आलोचना से जुड़े एक प्रश्न पर आचार्य प्रशांत ने कहा कि आत्म-ज्ञान के अभाव में व्यक्ति अपनी पहचान के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। उन्होंने कहा कि जब तक व्यक्ति स्वयं को नहीं समझता, तब तक वह बाहरी मान्यताओं पर निर्भर रहेगा। शैक्षणिक दबाव और परिणामों को लेकर उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति का नियंत्रण केवल अपने प्रयास, नीयत और ईमानदारी पर होता है, परिणामों पर नहीं। उन्होंने भगवद्गीता के सिद्धांत 'मा फलेषु कदाचन' का उल्लेख करते हुए कहा कि अच्छे अभिभावक और शिक्षक वही हैं जो बच्चों से केवल ईमानदारी और प्रेम की अपेक्षा रखें, न कि निश्चित परिणामों की। उन्होंने छात्राओं को अपने अध्ययन से प्रेम करने और उसे समझने पर बल दिया। स्मरण शक्ति से जुड़े प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि मस्तिष्क वही याद रखता है जिसे हम महत्व देते हैं और जिससे हमारा लगाव होता है। इसलिए पढ़ाई को बोझ न मानकर उससे जुड़ाव विकसित करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आध्यात्म अलग विषय नहीं, बल्कि शिक्षा का ही अभिन्न अंग है। उन्होंने विद्या और अविद्या के संतुलन को पूर्ण शिक्षा बताया जहाँ बाहरी ज्ञान के साथ साथ स्वयं को जानने की प्रक्रिया भी शामिल हो। आचार्य प्रशांत ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर कहा कि तकनीक स्वयं समस्या नहीं है, बल्कि उसका अचेत और अज्ञान उपयोगकर्ता ही वास्तविक समस्या है। यदि उपयोगकर्ता इतना सजग हो कि वह इसके दुष्प्रभावों जैसे जलवायु संकट में इसके योगदान को समझ सके, तो वही तकनीक मानवता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। कहा कि अधिकांश कर्तव्य हमारी अपनाई हुई पहचानों से उत्पन्न होते हैं, जबकि सच्ची जिम्मेदारी समझ और प्रेम से आती है। उन्होंने छात्राओं को स्वयं से यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया व कहा कि पहले अपने को समझो कि मैं कौन हूं। उन्होंने कहा कि भले ही बाहरी रूप से हम अलग-अलग हों, पर हमारी चेतना हमें एक करती है यही सबसे महत्वपूर्ण सत्य है। आचार्य प्रशांत ने स्पष्ट किया कि जीवन में उत्कृष्टता का अर्थ है कभी भी अधूरेपन से संतुष्ट न होना और स्वयं के प्रति पूरी ईमानदारी बनाए रखना।---मैं विद्यालय में आकर अभीभूत हूं..पत्रकारों से बातचीत में आचार्य प्रशांत ने कहा कि मैं विद्यालय में आकर अभीभूत हूं, जहां छात्राओं में ईमानदारी व जिज्ञासा देखी, छात्राओं के सवाल हृदयस्पर्शी व विचारात्मक थे। छात्राओं के प्रश्न गहरे थे प्रतिप्रश्न थे, और मान भी नहीं रहे थे जबतक समझ न सके, संवाद गहरा व सुंदर था, उन्होंने युवाओं को संदेश दिया व कहा कि पहले शिकायत करते थे कि दुनिया, समाज व परंपरा ने दबा रखा है, दमनकारी व्यवस्थाएं थीं जिसमें विद्रोह भी होता था लेकिन आज की पीढ़ी का काम दोहरा है। जो बाहर ठीक नहीं है झूठा, फरेब है उसे नहीं मानते व ठुकरा देते हैं लेकिन जो मन के अंदर बैठा है। उसे नहीं ठुकरा पाते, इस मौके पर विद्यालय के चेयरमैन शांतनु, प्रधानाचार्या शालू बब्बर सहित शिक्षक, शिक्षिकाए व छात्राएं मौजद रही।